Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: 7.866, Volume 15, No. 04, October-December, 2025, pp. 75-82

महिला सशक्तिकरण के परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिंदी महिला कथा–लेखन (राजस्थान के संदर्भ में)

डॉ. सुमन कंवर*

सहायक आचार्य (हिन्दी विभाग), विवेक पी.जी. महाविद्यालय, कालवाड़, जयपुर, राजस्थान।

*Corresponding Author: sumankr.rathore@gmail.com

Citation:

सार

भारतीय समाज में नारी शक्ति को जीवन का आधार मानते हुए प्राचीन काल से ही उसे सम्मानित स्थान मिला और इक्कीसवीं सदी में उसने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाकर महिला सशक्तिकरण को नई दिशा दी। सशक्तिकरण का मतलब केवल आर्थिक स्वतंत्रता या सुरक्षा भर नहीं है, बल्कि मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता भी है। आज मीडिया, शिक्षा और नए सामाजिक दृष्टिकोण ने महिलाओं को आत्मनिर्भरता और सम्मान की ओर अग्रसर किया है। नारी चेतना ने पुरानी सीमाओं को तोड़कर अपनी अस्मिता का एहसास करा रही है। राजस्थान की महिला कथाकारों ने अपने लेखन से समाज की विसंगतियों और पितृसत्तात्मक सोच को उजागर किया। यहाँ का साहित्य दलित, स्त्री और हाशिये पर खड़े वर्गों की पीड़ा का चित्रण करता है। राजस्थान की प्रमुख हिंदी महिला कहानीकारों में आदर्श मदान, मनमोहिनी, कमला गोकलानी, कांति वर्मा, कुसुमांजलि शर्मा, मंजुला गुप्ता, पुष्पा रघु, जेबा रशीद, सावित्री रांका, कमल कपूर, मनीषा कुलश्रेष्ठ, रजनी मोरवाल, दीप्ती कुलश्रेष्ठ, सुखदा कछवाह, विद्या पालीवाल, कुसुम शर्मा, कमलेश शर्मा, कमलेश माथुर, डॉ. मोनिका मिश्रा, करुणा श्री, क्षमा चतुर्वेदी, साधना जे. भट्ट आदि लेखिकाओं ने कहानियों के जरिए स्त्री की संघर्षपूर्ण स्थिति और उसकी आकांक्षाओं को सामने रखा। इन कहानियों में बाल–विवाह, पारिवारिक बंधन, शोषण, गरीबी और असमानता के साथ–साथ स्त्री की आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान की खोज दिखाई देती है। उदाहरण के लिए सुखदा कछवाह की 'रूठी रानी' कहानी में बाल विवाह और स्त्री शोषण पर चोट करती है, वहीं विद्या पालीवाल ने परिवार और रिश्तों की जटिलताओं के बीच स्त्री की अस्मिता को स्वर दिया। जेबा रशीद और मनीषा कुलश्रेष्ठ ने स्त्री जीवन की दरिद्रता और विडंबनाओं को अपनी रचनाओं में सजीव किया है। स्पष्ट है कि राजस्थान की महिला कथाकारों ने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक सरोकारों से जोड़ते हुए दबी हुई आवाजों को शब्द दिए, स्त्री के अधिकारों और आत्मसम्मान की चेतना को उभारा। यही कारण है कि उनके लेखन में नारी सशक्तिकरण की सशक्त गूँज सुनाई देती है। बदलते समय और समाज की पृष्ठभूमि में ये कहानियाँ आज भी प्रासंगिक हैं और नारी की असली गाथा प्रस्तुत करती हैं।

शब्दकोशः *महिला सशक्तिकरण, अस्मिता, आत्मसम्मान, सामाजिक सरोकार, राजस्थान की महिला कथाकार, स्त्री विमर्श, दलित एवं हाशिये का वर्ग, पारिवारिक बंधन, शोषण, असमानता, स्त्री चेतना, हिंदी कथा साहित्य।*

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

प्रस्तावना

भारतीय परिप्रेक्ष्य में नारी सृष्टि की सुन्दर कृति जो इस मानव जीवन का आधार है। जिसके बिना मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। पुरातन काल से ही भारत में नारी का विशिष्ट स्थान है। यहां नारी की पूजा विभिन्न रूपों में की जाती है। 21 वीं सदी में भी नारी का वही स्थान है। 21 वीं सदी की भारतीय नारी ने विभिन्न कठिनाइयों को पार करते हुए विश्व में यह स्थान प्राप्त कर लिया है। आज नारी की इसी विकास गाथा को महिला सशक्तिकरण का नाम दिया जा रहा है। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं का समाज में शक्तिशाली होना व उचित सम्मान प्राप्त करना। अगर देखा जाए तो पुरातन काल से ही भारतीय समाज में महिलाओं ने अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज करायी है। चाहे बात युगों की हो या आजादी से पूर्व की महिलाओं ने अपना वर्चस्व हमेशा कायम किया। चाहे बात माता सीता की हो या अपने राज्य के लिए अपने बच्चों की प्राणों की बलि देने वाली पन्नाधाय की या फिर अपने राष्ट्र के लिए अपने प्राणों की बलि देने वाली लक्ष्मीबाई की। आजादी के बाद महिलाओं ने वास्तव में कई क्षेत्रों में अपनी क्षमताओं का परिचय दिया। चाहे वह क्षेत्र राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक कोई भी हो।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ केवल आर्थिक स्वतंत्रता या शारीरिक सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह महिलाओं की मानसिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक स्वतंत्रता को भी समाहित करता है। जब साहित्य में महिलाओं को सक्षम, आत्मनिर्भर, और प्रेरणादायक रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो यह समाज में महिलाओं के प्रति एक नई दृष्टिकोण को जन्म देता है। साहित्य के इस सकारात्मक पहलू का समाज के हर वर्ग में असर होता है, चाहे वह शहरी हो या ग्रामीण, और इसके कारण महिलाओं की महत्वाकांक्षाएँ, सपने, और उनके प्रति समाज का व्यवहार प्रभावित होता है।

इक्कीसवीं सदी की नारी चेतना आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक परिवर्तनों तथा घटनाओं से उपजी है। आज नारी की अस्मिता अपने उबाल पर है। नारी चेतना से जन्में विचार नारी को केवल स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा नहीं दे रहे हैं बल्कि आदि काल से जो उसका शोषण और उत्पीड़न होता रहा है, उसके विरुद्ध संघर्ष करने की शक्ति प्रदान करते हैं। यही कारण है कि नारी मुक्ति आन्दोलन समाज में अपना स्थान बना चुका है। वह इस पूंजीवादी व्यवस्था में देह–सौन्दर्य के सिद्धान्त के विरुद्ध खड़ी हुई है। नारी इसे प्रगतिशील और अर्थयुग में अपने अस्तित्व की पहचान कराने हेतु मर्दवादी समाज से संघर्ष कर रही है। वह पुरुष की तरह परिवार और समाज की इकाई है। समाज को यह एहसास कराने के लिए वह संघर्षरत है। स्वतंत्रता के 79 वर्षों ने और 21वीं सदी ने नारी ने यह प्रमाणित कर दिया है कि जैविक आधार पर उसे अब द्वितीय पायदान पर नहीं रखा जा सकता है और न ही हाशिए पर। वह आज अगर सेना में अधिकारी बन सकती है तो पुलिस विभाग में आई.पी. एस भी बन सकती है और आई.ए.एस. में टॉप भी कर सकती है। आज अंतरराष्ट्रीय कम्पनियों में वह शीर्ष पदों पर है। राजनीति में मुख्यमंत्री के पद पर आसीन है। हम यह कह सकते हैं कि सामाजिक परिस्थितियों से जन्मी चेतना ने नारी अस्मिता को एक ठोस पहचान दी है और अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए वह स्वयं को सुदृढ़ कर रही है।

साहित्य और मानव से घनिष्ठ सम्बन्धता के कारण साहित्य में मानव जीवन और उसके परिवेश को अनेक संवेदनात्मक विधाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है। कहानी इन्हीं संवेदनात्मक विधाओं में से एक है, जिसमें समयानुरूप अनेक बदलाव हुए और इन बदलावों को इस विधा ने समय–समय पर साहित्य में अंकित किया है। आधुनिक काल में प्रयोगवाद के बाद कविता में नये आयामों की तलाश आरंभ हुई। इन्हीं आयामों में एक कहानी विधा 1960 के दशक में हिन्दी साहित्य में जनवादी मूल्यों और जनाकांक्षी प्रश्नों के साथ आयी। आजादी के बाद लोकतांत्रिक मूल्यों में आई गिरावट के कारण आमजन के मन में संदेह उत्पन्न हुआ। जनसामान्य वर्ग की शासन के प्रति जो आशा आकांक्षाएँ थी वे बिखरने लगी। आम जन दुख, नैराश्य, अवसाद और पीड़ित होकर शासन से अनेक सवाल करने लगा। इन्हीं सवालों को लेकर समकालीन कहानी का स्वरूप

निर्मित होता है। आजादी के बाद से वर्तमान तक कहानी लेखन में महिलाओं की भूमिका अति महत्वपूर्ण हो गई है।

समकालीन कथा साहित्य में महिला लेखन की विविध संदर्भों में स्थिति और गति पर विचार करने से पहले समकालीन की अवधारणा स्पष्ट होना आवश्यक है। समकालीनता अंग्रेजी के ब्वदजमउचवतंतल' का हिन्दी पर्याय है, जिसका तात्पर्य है–ैजंजम वि इमपदह ब्वदजमउचवतंतल अर्थात् समकाल या एक ही काल या अपने समय का, या समवयस्क या सामयिक या एक समय आदि से है। वास्तव में समकालीनता एक सम्पूर्ण चेतना है, जो सामयिक संदर्भों, दबावों के तहत विशिष्ट स्वरूप व संरचना धारण करती है। अपने समय की महत्वपूर्ण समस्याओं के साथ मुठभेड़ ही समकालीनता है। समकालीनता एक ऐसा विशिष्ट पद है जो सतत् वर्तमान प्रक्रिया को अपने में समाहित किये रहता है। वर्तमान समाज और संस्कृति तथा रचनात्मक दबाव जहाँ एकमेव हो जाए वहाँ काल की गति वर्तमानता के साथ समकालीन भी होती है। यह कालक्रम के साथ ही साथ एक विचार भी है। हर एक समय एवं समाज की समस्याएं एक सी नहीं होती है वह समय के साथ परिवर्तित होती रहती है। अपने समय का यथार्थबोध तथा समाज के प्रति लोक पक्षधरता और सचेत मानवीय चेतना ही समकालीनता का बोधक होती है। यह वास्तव में भावों के वैविध्य का रूपान्तरण है। समकालीनता को प्रासंगिकता, आधुनिकता से जोड़कर उनको समानधर्मी समझा गया है।

मैनेजर पांडेय के अनुसार 'केवल नया ही समकालीन नहीं होता, बल्कि जो सार्थक है वही समकालीन है, चाहे वह पुराना ही क्यों न हो। इस तरह समकालीनता केवल काल विशेष से संबद्ध नहीं होती अथवा उसका दायरा सीमित है ऐसा भी नहीं कहा जा सकता है।

विजेन्द्र के अनुसार – 'समकालीनता तारीख ओर दिन से नहीं बल्कि विश्व दृष्टिकोण से पहचानी जाती है।' इस प्रकार समकालीन कहानी एक नया रूप है, जिसमें सामाजिक चेतना, सामाजिक परिवर्तन, विरोध, आक्रामकता, और मानवीय सरोकार अपनी स्थितियों मानवीय दशाओं का विश्लेषण और सर्जनात्मक वैचारिक तनाव का सतत् विद्यमान है। यह कविता आज की असल जिन्दगी से साक्षात्कार कराती है।

विश्वम्भरनाथ उपाध्याय के अनुसार – 'समकालीनता अपने काल की समस्याओं और चुनौतियों का मुकाबला करना है। समस्याओं और चुनौतियों में भी केन्द्रीय महत्व रखने वाली समस्याओं की समझ से समकालीनता उत्पन्न होती है।' इस प्रकार समकालीनता अपने काल की समस्याओं और चुनौतियों का मुकाबला करना है। समस्याओं और चुनौतियों मे भी केन्द्रीय महत्व रखने वाली समस्याओं की समझ से समकालीनता उत्पन्न होती है।

राजस्थान के हिंदी महिला कहानी लेखन का आरंभ थोड़ा धुंधला है लेकिन वर्तमान में ये तल्खी के साथ लेखन कर रही है। राजस्थान की प्रमुख हिंदी महिला कहानीकारों में आदर्श मदान, मनमोहिनी, कमला गोकलानी, कांति वर्मा, कुसुमांजलि शर्मा, मंजुला गुप्ता, पुष्पा रघु, जेबा रशीद, सावित्री रांका, कमल कपूर, मनीषा कुलश्रेष्ठ, रजनी मोरवाल, दीप्ती कुलश्रेष्ठ, सुखदा कछवाह, विद्या पालीवाल, कुसुम शर्मा, कमलेश शर्मा, कमलेश माथुर, डॉ. मोनिका मिश्रा, करुणा श्री, क्षमा चतुर्वेदी, साधना जे. भट्ट आदि हैं। राजस्थान प्रदेश की अपनी पृष्ठभूमि है, उसकी अपनी परिवेशगत समस्याएँ हैं। यहाँ कभी सामंतवाद प्रभावी रहा है तो कभी रुढ़िवादिता। यहाँ के सामंतीकाल में सामान्यजन इनके शोषण का जीवंत प्रतीक रहा है। दलित, स्त्री, मजदूर और आमजन सदैव इनसे प्रताड़ित ही रहे हैं।यहाँ के सामंती काल में शोषण अपनी पराकाष्ठा पर था। यही कारण है कि यहाँ के साहित्य के आरंभिक दौर की रचनाओं में आमजन की पीड़ा दृष्टिगत होती है परन्तु आजादी के बाद की कहानियों में आमजन की पीड़ा, उसका शोधन, उसका प्रतिकार एवं दिग्दर्शन होता है। राजस्थान की महिला कथाकार इन्हीं सब परिस्थितियों से प्रभावित हो विविध संदर्भ में निरंतर लेखन कर रही है। इस प्रकार के महिला लेखन द्वारा वैश्वीकरण के प्रभाव से बदलते सामाजिक मूल्यों व उसके सकारात्मक रुप भी सशक्त रुप में उभर

कर सामने आ रहे है। यह महिला लेखन बिना किसी खाँचे में बंधे अबाधगति से बदलते समय की रफ्तार को एक चुनौती के रुप में स्वीकार करते हुए, भविष्य की ओर बढ़ रही है। सांस्कृतिक विघटन से प्रभावित मानव–मूल्यों को सुरक्षित रखने और संजोने–सँवारने का दायित्व भी महिला रचनाकार के लिए एक चुनौती है, जिसे वह समझ कर लिख रही है।

राजस्थान की स्त्रियों का जीवन लंबे समय तक परंपराओं, पितृसत्तात्मक व्यवस्था और सामाजिक रूढ़ियों से बंधा रहा है। पर्दा प्रथा, बाल विवाह और अशिक्षा ने स्त्रियों की स्वतंत्रता को सीमित किया। किंतु शिक्षा और सामाजिक चेतना के बढ़ते प्रभाव से राजस्थान की स्त्रियों ने अपनी अस्मिता और अधिकारों की पहचान करना शुरू किया। राजस्थान की स्त्रियाँ अब केवल परंपराओं की संवाहिका नहीं, बल्कि परिवर्तन की वाहक बन गई हैं।उनकी कहानियों में शोषण और पीड़ा के साथ–साथ संघर्ष और आत्मबल की भी गहन छवियाँ दिखाई देती हैं। यह कथा–लेखन स्त्री को वस्तु से विषय बना देता है और उसे स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रदान करता है।

ज़ेबा रशीद राजस्थान की उन लेखिकाओं में शामिल है जो अपनी कहानियों के माध्यम से समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मक सत्ता में स्त्रियों की दोयम दर्जे की स्थिति के साथ स्त्री के स्वाभिमान, को पुरुष के संतुलित सामाजिक जीवन के साथ स्थापित करने का प्रयास किया गया है। ये मानती है कि इनमें स्त्री जीवन का संघर्ष के साथ उसमें विजय प्राप्त करने वाली स्त्री चेतना भी है, कहीं समाज बेड़ियां बनता है तो कहीं उसी में जीवन की सफलता निहित दिखाई देती है। वह धीरे–धीरे आत्मबोध से परिचित हुई है फिर भी अपने सही रूप में स्थान पाने के लिए संघर्ष अवश्य कर रही है इसलिए सभी विरोध अवरोध की जानकारी कर उसे आगे आना होगा तभी वह समाज और राष्ट्र निर्माण में अपने भूमिका का निर्वाह पूरी तरह से कर पाएगी। उनकी कहानी **'चिनगारी'** इसी स्थिति को बयाँ करने वाली है। वीना के पति पवन का अपनी सहयोगी कर्मचारी पायल के साथ अवैध संबंध है। वीना अपने पति के प्रति पूर्णतः समर्पित है फिर भी वह पवन पर एकाधिकार नहीं कर पाती है। ऐसी स्थिति में कोई भी औरत अपने को नहीं समझा पाती है। शबनम के पूछने पर वीना कहती है *''हाँ सभी जानते हैं मैं बहुत अमीर औरत हूँ लेकिन सच यह है कि मैं एक गरीब औरत हूँ। हाँ सम्बू मैं बहुत गरीब हूँ धन दौलत से कोई सुखी नहीं होता है... स्त्री करोड़पति क्यों न हो... अगर उसका पति चरित्रहीन हो तो उसकी बीबी बेहद गरीब हुई न भले ही वह मेरी तरह करोड़पति हो...मुझसे बढ़कर कोई गरीब नहीं। ठीक इसी तरह किसी मर्द की बीवी वफादार न हो तो ...सच सम्बू मैं गरीब हूँ ... बहुत गरीब।''* इस विवाह और प्रेम के सम्बन्ध में जेबा रशीद **'बदला क्यों'** कहानी में लिखती हैं *''कुछ शादियाँ कर्ज की तरह निभायी जाती हैं। ऐसी शादियों का परिणाम होता है कि कहीं पति, कहीं पत्नी, दोनों एक दूसरे की कमी में किसी और की तलाश में भटकते रहते हैं।''* ऐसे ही दो कहानियाँ **'चिड़ियाँ एक माँ'** और **'कंटीली राहे'** है। चिड़ियाँ एक माँ कहानी में समीया एक विधवा स्त्री है। विधवा होने के बाद भी वह पूरी तरह अपने पति धर्म के प्रति निष्ठावान बनी रहती है। वह अपने परिवार का गुजर बसर करने के लिए काम ढूँढने निकलती है, तब वह दुनिया की वास्तविकता को समझ पाती है। *''असीम कड़वाहट से उसने फैसला किया कि बस अब कोई हरकत की तो निपटना ही पड़ेगा। गरीब हूँ पर मेरी भी कोई इज्जत है। गरीब मजबूर औरत को ये अमीर लोग... रास्ते में पड़ी धूल समझते हैं मगर क्यों यह नहीं जानते कि रास्ते में पड़ी धूल भी कभी रेत बनकर पैर जला सकती है। दुनियाँ के सामने सज्जन कहलाने वाला, पर मनइतना गंदा, नीच, लम्पट... कुत्ते की तरह मेरे पीछे ही पड़ गया। मैं अपने जिस्म की सुनती तो मेहनत मजदूरी करती...? ना जाने कब मैंने अपनी जिम्मेदारियों के आगे अपनी इच्छाओं को दफन कर दिया। मजबूरी भरी रेत की परात के नीचे गहराइयों से गाड़ दी अब तो केवल थोड़ी–सी चिंगारी बची है। एक युग बीत गया कंटीला, पथरीला मैदान, गलियाँ पार करके इतनी कठिन जिन्दगी का सफर तय कर रही हूँ।''* उक्त कथन की पंक्तियाँ स्त्री जीवन के इतिहास को समझाने का भरसक प्रयास करती हैं।

सावित्री रांका की कहानी **' मौन प्रतिकार'** कहानी में स्त्री जीवन एवं उसकी आर्थिक स्थिति को केंद्र में रखा गया है। समकालीन दौर की स्त्री पढ़–लिख कर आर्थिक रूप से निर्भर हो रही है फिर भी उस पर पुरुष सत्ता का प्रभाव अधिक दृष्टिगत हो रहा है। लेखिका की पीड़ा यह है कि सदियों तक प्रताड़ना का दंश झेलने वाली नारी आज भी पराधीन ही है। चाहे आर्थिक रूप से वो सक्षम हो परंतु फिर भी पुरुषवादी सोच के सामने उसे नीचे ही झुकना पड़ता है। लेखिका उस स्त्री को स्वावलंबी बनाने का मन्त्र देते हुए पुरुष सत्ता के साथ खड़ा होने का संकेत देती है। **'एक संघर्ष अपनों से'** कहानी में रचनाकार ने स्त्री जीवन के विविध पक्षों से जुड़े संघर्षों को दिखाया है। एक प्रकार से यह कहानी स्त्री जीवन का जीवंत दस्तावेज कहा जा सकता है। कहानी की नायिका महसूस करती है कि एक न्याय प्रिय पुलिस अधिकारी बनकर समाज में शांति स्थापित करने से अधिक कठिन कार्य अपने परिवार के संघर्ष में जीना है। **'समाधान'** कहानी अपने से पराये होते रिश्तों का दर्द बयां करती है। कहानी औद्योगिकीकरण संस्कृति के प्रभाव से बनने वाली जीवन शैली को दिखाती है। **'न्यायमंडी'** कहानी में न्यायालय की भ्रष्ट कार्य प्रणाली का चित्र खेला गया है। वही मूल्य की जीत कहानी के माध्यम से पारिवारिक विभाजन का एक प्रमुख कारण पीढ़ी अंतराल भी माना गया है। जिसमें आधुनिकता के फेर में आज की युवा पर पीढ़ी पढ़ कर संस्कारों से अलग होती जा रही है। नारी मनोविज्ञान को भली–भाँति समझने वाली लेखिका सावित्री रांका की कहानी **'ममता'** एक माँ की व्यक्तिगत पीड़ा को साझी पीड़ा बनाकर आज धर्म के नाम पर कुछ स्वार्थी लोगों द्वारा नौजवनों को जिस तरह से बरगलाया जा रहा है, उन पर चिन्ता व्यक्त कर रही है।''

समकालीन महिला कहानी लेखिकाओं में **रजनी मोरवाल** का कहानी संग्रह **'कुछ तो बाकी है' कथ्य** की दृष्टि से सशक्त अनुभव एवं प्रेरणा पर आधारित है। कहानी संग्रह की अधिकांश कहानियों में स्वतः ही स्त्री विमर्श आ गया। यहाँ रचनाकार ने बाह्य जगत में अटके न रहकर अपने कथा जगत् और पात्रों के भीतर संसार में बड़ी कुशलता से प्रवेश किया है। लेखिका के अधिकांश पात्र अपने आप में बेहद मजबूत एवं संवेदनशील हैं। वे दुनियाँ की सीमा के भीतर बेहद संतुष्ट व सजग हैं, उन्हें किसी भी सहृदयता की भेंट की कोई दरकार नहीं है। कहीं अगर उनमें कोई चतुराई नजर भी आती है तो सहज मनुष्य स्वाभाव ही है। लेखिका ने अपने संग्रह की भूमिका में 'अपनी बात' के अंतर्गत इस बात कीस्वीकारोक्ति देते हुए कहा है कि 'मैं स्त्रियों के दुख–दर्द बीनती हूँ।'' यहाँ दुःख–दर्द बीनने से अभिप्राय यह कि स्त्रियों पर पग–पग पर होने वाले अत्याचारों से लेखिका संवेदित होकर उन्हें सन्मार्ग दिखाती है। लेखिका से अपनी ही सजातीय बहिनों का दुःख दर्द देखा नहीं जाता और यह दुःख दर्द ही अचेतन में जाकर कहानी का निर्माण करते हैं। अपनी रचनाओं के बारे में बताते हुए उन्होंनें लिखा है ''लेखन मेरे लिए साँस लेने जैसी आदत है, मेरे जीवन का एक अहम हिस्सा है, अपने विचारों को शब्दों में ढालकर यूँ चैन पाऊँ तभी मेरी देह को जिंदा रहने का यकीन पुख्ता होता है। दिल और दिमाग में ठनी रहती है. .. कभी विचार जीतते हैं तो कभी कल्पना.... और मैं तथ्यों को साथ लिए तन–मन से सामंजस्य साधती रहती हूँ, जब नई–नई कहानियाँ पृष्ठों पर लहलहाने लगती हैं तो धीमे–धीमे मेरे सपने साकार होते जाते है।'' इस प्रकार लेखिका आम स्त्री की पीड़ा को, उसके दर्द को बयाँ करना अपना नैतिक धर्म समझती है। रजनी मोरवाल कहानी में लिखती है *''भूखा पेट इंसान को कितना खुदगर्ज बना देता है रिश्ते भी पेट के आगे रोटियों की शरण लेने लगते हैं। रशीद का मानना था कि यह प्यार वफा और समझदारी की बातें तभी हो पाती है जब इंसान अपना पेट भरकर डकार लेने की औकात में हो वरना सब बातें बकवास होती हैं।''* वस्तुतः राजस्थानी परिवेश में स्त्रियों की स्थिति ठीक नहीं कही जा सकती है। इसका एक कारण तो निरक्षरता एवं दूसरा प्रमुख कारण समाज की दकियानूसी सोच है। शिक्षा के अभाव के कारण स्त्री को दोयम दर्जा दिया गया है। प्राचीन सोच के अनुरूप आज भी वह केवल पाँव की जूती ही समझी जाती थी एवं परिवार में वह केवल बच्चे पैदा करने वाली मशीन मात्र समझी जाती थी किन्तु अब परिस्थितियां बहुत कुछ बदल गई है।

सुखदा कछवाह की **'रूठी रानी'** कहानी संग्रह में संगृहीत कहानियाँ सामाजिक सरोकारों से जुड़ी हुई हैं। इनकी कहानी **'घर की लक्ष्मी'** में बाल–विवाह की समस्या को उठाया हैं, वही **'आखिर कब तक'** कहानी में लेखिका ने समाज के तथा कथित पुरुष वर्ग द्वारा प्रताड़ित और शोषण स्त्री का चित्रण करते हुए लिखती है– *''नारियों के लिए तो सतयुग, त्रेता, द्वापर और आज का युग भी कलयुग ही रहा है सतयुग में सपने की बात सत्य मानकर राजा हरिश्चंद्र ने अपनी पत्नी को काशी के बाजार में बेच डाला। त्रेता में भगवान राम ने सब कुछ जानते हुए भी बिना सीता को बताएं लक्ष्मण के साथ उसे वन में छुड़वा दिया।''* इसी संदर्भ में वह लिखती है– *''उन्हें तो मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाना था। द्वापर में पांच महारथी पतियों के सामने द्रोपदी का चीर खींचा गया और वे हारे हुए जुआरी देखते रहे। .....आज कोई माई का लाल जो द्रोपदी की ओर दृष्टि उठा कर देखेतो वह उसे वहीं उपेड़कर घर देगी। अग्नि परीक्षा में खरी उतरी सीता एक थीथी के कहने से अपवित्र ही गई। निर्दोष अहिल्या पति की पवित्र ठोकर से शिला बन गई व श्री राम की पवित्र ठोकर से वापस नारी बन गई जैसे जमाने भर की अपवित्रता का ठेका केवल नारी के पास हैं पुरुष तो जन्मजात पवित्र है।''* नारी की स्थिति को विभिन्न रूपों में स्थापित करते हुए वह लिखती है– ''जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता वास करते हैं।

डॉ. विद्या पालीवाल की कहानियों में भागवंती, भाभा, माँ, मृगतृष्णा, झिलमिल, वापसी, निर्णय, शून्य, मोहभंग, अम्मा, क्यों आखिर क्यों आदि में एक अनजानी वेदना निसृत हुई है। नारी–मन, बाल–मन, मनुज–मन, आज जिस व्यथा वेदना से संसृत है, वह वेदना सृष्टि के सब मानवों की है और उसी मानव की अभिव्यक्ति इनकी कहानियों का ध्येय है। सामाजिक प्रदुषण, बढ़ती हुई वेगवती आकांक्षाएं और अर्थ तंत्र की उहा पोह में आज मनुष्य की जीवन व्यवस्था चरमरायी–सी प्रतीत होती है, रिश्तों में परस्पर बढ़ता कैंसर–सा वैमनस्य जीवन को लघुता में परिवर्तित करता हुआ एक पक्षीय और एकाकी बनाता जा रहा है, रिश्ते दरकते जा रहें हैं, निश्छल स्नेह संबंधी और सामंजस्य ओझल से हो गए हैं, उन्हीं की सार्थक अभिव्यक्ति है–आलोच्य कहानी संग्रह **'दरकते रिश्ते'** में। कहानी 'मृगतृष्णा' में एक मध्यम वर्गीय परिवार के टूटन की स्थिति के निमित्त कारण उनकी आशाओं आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं होना बताया हैं। **'मोहभंग'** कहानी में लेखिका ने सौदामिनी नामक एक मध्यवर्गीय नौकरी पेशा महिला के अपने परिवार व समाज से होते हुए मोहभंग को दिखाया है। सौदामिनी एक नौकरी पेशा औरत है जो नौकरी भी करती है और घर का भी सारा काम करती है। उसके बेटे अविनाश और अखिलेश अपनी माँ की एक न सुनते थे। दोनों बेटे आलसी और कामचोर हैं। जब भी माँ उनसे नौकरी के बारे में बात करती, तो वे अपनी माँ से सिर–पैर की बातें करते और उसे ही उलाहना देते। एक दिन अमित अपनी माँ से कहता है *''आपने अपनी निष्ठा और कर्मठता से क्या पाया है माँ। सिर्फ एक आत्मतोष ही तो..... केवल एक आत्मा से जीवन प्रक्रिया के सभी काम नहीं हो जाते।''* इन बातों से दामिनी को बहुत दुःख होता है। परिवार से उसका मोहभंग हो जाता है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ द्वारा रचित कहानी–संग्रह **'कठपुतलियाँ'** में संकलित कहानी **'स्वांग'** आधुनिकता की दौड़ व पाश्चात्य संस्कृति की अंधाधुंध होड़ में भारतीय संस्कृति की लुप्त होती हुई लोककलाओं, लोकनाट्यों व युवा शक्ति की बदलती मानसिकता के चित्र को सजीव करती है। प्रस्तुत कहानी राजस्थान अंचल की विलुप्त होती लोक कलाओं पर हमारा ध्यान आकर्षित करती है। **'कालिंदी'** कहानी में स्त्री मनोदशा का चित्रण करते हुए वह कहती है *''अब वह बिस्तर पर पड़ी है, मैं उससे रूबरू हूँ वह मुझसे आँख नहीं मिलाती। मैं अपने मन की खोह में घुसकर खुदाई करके इस औरत से अपने अटूट संबंध की जड़ खोज रहा हूँ।''* लेखिका ने स्त्री मन की थाह लेते हुए स्पष्ट किया है कि ये घृणित कर्म करते हुए स्त्री तार तार हो जाती है परन्तु पापी पेट के कारण वह मन के विपरीत जाकर भी ग्राहक को संतुष्ट करती है। समकालीन दौर की सबसे बड़ी विडंबना है रिश्तों का तार–तार होना। आज पिता पुत्र, भाई–भाई के मध्य वैमनस्य छा गया है जिसका मूल कारण संपति या अर्थ माना जा सकता है परन्तु इस सम्पति या अर्थ से बढ़कर रिश्तों को शर्मसार किया है अनैतिक संबंधों ने। कहाँ गए वो रिश्ते जिनके लिए मनुष्य मरता मिटता था। आज हवाओं में इतना जहर घुल गया है कि वह जाए तो जाए कहाँ।

यह कहना समीचीन है, कि राजस्थान की स्वातंत्र्य समकालीन महिला कहानीकारों की कहानियों में महिला सशक्तिकरण दृष्टिगत होता है। इन रचनाकरों ने समय और समाज की नब्ज को पकड़ा है और जीवन में आयी कड़वाहट, नीरस, बोझिल जीवन, नारी यातना, महानगरीय जिंदगी की भयावहता के प्रति आक्रोश, व्यवस्था के प्रति तीव्र आक्रोश, स्त्री स्वातंत्र्य की सोच, भूमंडलीकरण एवं बाजारवाद के प्रभावों, नव उपभोक्ता संस्कृति के बढ़ते प्रभाव, बदलते जीवन मूल्यों तथा समाज में स्त्री–पुरुष संबंधों में आते बदलाव एवं टूटती मानवीय संवेदनाओं को अपनी कहानियों में रेखांकित किया है। इन कहानीकारों ने यहाँ के कृषकों, भूमिहीन मजदूरों, बंधुआ मजदूरों तथा सामान्य एवं उपेक्षित वर्ग की समस्याओं को बखूबी पहचाना और उनका समाधान भी प्रस्तुत किया। ये विविध संदर्भों में लेखन कर रही है। क्षमा चतुर्वेदी, रजनी मोरवाल, मोनिका मिश्रा, दीप्ति कुलश्रेष्ठ, विद्या पालीवाल, मनीषा कुलश्रेष्ठ, सुखदा कछवाह, जेबा रशीद, कमलेश माथुर, कुसुम शर्मा, करुणा श्री जैसी लेखिकाओं ने स्त्री समाज की पीड़ा को बेबाक अभिव्यक्ति दी है। समकालीन हिन्दी कहानी लेखिकाओं ने अपने समय को पूरे परिवेश के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उसने रोजमर्रा की जिन्दगी में होने वाले सामान्य जीवन प्रसंगो को अपनी परिधि में लिया है, तो अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भो को भी उद्घाटित किया है।

निष्कर्ष

यह कहा जा सकता है कि आज का यह महिला लेखन नारी की अस्मिता व उसके स्वतंत्रता की खोज का लेखन है जिसके माध्यम से वह सदियों की चुप्पी तोड़ रही है। स्त्री के इस लेखन में स्त्री की नई सोच, नवीन जीवन दृष्टिकोण और नवीन भाषिक संरचना की पहचान हुई है। आधुनिकता के इस युग में वे पुरानी परंपराओं और मान्यताओं को तोड़ अपने अनुकूल नए मानदंडों को निर्मित कर रही हैं, जहाँ स्वतंत्रता ही उसके लिए सब कुछ है। यह स्वतंत्रता उसे सामाजिक दायरों और दैहिकता से भी चाहिए। वह अपना जीवन अपने अनुसार जीना चाहती हैं। वह सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दायरों के खांचे में बंधा रहना नहीं चाहती है अपितु बदलते समय की रफ्तार को एक चुनौती के रुप में स्वीकार करते हुए, भविष्य की ओर बढ़ना चाहती है और सामाजिक बंधनों से उन्मुक्त होकर खुले आसमान में विचरण करना चाहती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सुमन कृष्णकांत, (2008), *साहित्य और समाज,* अभिधा प्रकाशन, नई दिल्ली
2. भारती, डॉ. धर्मवीर, (2008), *मानव मूल्य और साहित्य,* भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
3. अवस्थी, देवीशंकर, (2009),*नई कहानीः संदर्भ और प्रकृति,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
4. रशीद, जेबा (2016), *चिनगारी,* काव्य–संग्रह, हिंदी ग्रंथागार, जोधपुर
5. जैन, डॉ. निर्मला (2009),*आधुनिक साहित्य : मूल्य और मूल्यांकन,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. सिंह, नामवर (2008), *कहानी नयी कहानी,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7. यादव, राजेन्द्र व वर्मा, अर्चना (2008), *अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य,* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. गुप्ता, रमणिका,सं. (2008), *आधुनिक महिला लेखन,* शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली
9. साधक, हीरा (2009), *सुबह की पहली किरण,* पंचशील प्रकाशन, जयपुर
10. सिंह, पुष्पपाल (1986), *समकालीन कहानी युगबोध का संदर्भः* राधाकृष्ण प्रकाशन, 2/38 अंसारी रोड़, दरियागंज दिल्ली, प्रथम संस्करण
11. शर्मा, डॉ. ओम प्रकाश (2002), *समकालीन महिला लेखन,* खामा पब्लिशर्स, दिल्ली
12. मधुरेश (1979), *सिलसिला (समकालीन कहानी की पहचान),* प्रकाशन संस्थान, दिल्ली

13. रोहिताश्व (1996), *समकालीन कविता और सौन्दर्यबोध,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
14. वंशी, बलदेव (1978), *समकालीन कविता : वैचारिक आयाम,* पराग प्रकाशन, दिल्ली
15. कुलश्रेष्ठ, दीप्ती (2013), *परिणति,* काव्य संग्रह, लोकचेतना प्रकाशन, नई दिल्ली
16. कुलश्रेष्ठ, मनीषा (2007), *कठपुतलियाँ,* काव्य संग्रह, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली

❑❑❑